९. मधुर-मधुर मेरे दीपक जल !

- महादेवी वर्मा

कल्पना पल्लवन

'दीपावली त्योहार को मिल-जुलकर मनाने से सामाजिक एकता दृढ़ होती है', इस विधान को चर्चा द्‌वारा स्पष्ट कीजिए :-

कृति के लिए आवश्यक सोपान :

● भारत में मनाए जाने वाले त्योहारों के नाम पूछें । ● दीपावली त्योहार कब और कितने दिन मनाया जाता है, बताने के लिए कहें । ● दीपावली त्योहार पारिवारिक और सामाजिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हैं-चर्चा कराएँ ।

मधुर-मधुर मेरे दीपक जल !
युग-युग प्रतिदिन-प्रतिक्षण- प्रतिपल,
प्रियतम का पथ आलोकित कर !

सौरभ फैला विपुल धूप बन,
मृदुल मोम-सा घुल रे मृदु तन;
दे प्रकाश का सिंधु अपरिमित,
तेरे जीवन का अणु गल-गल !

सारे शीतल-कोमल-नूतन,
माँग रहे तुझसे ज्वाला कण
विश्व शलभ सिर धुन कहता 'मैं
हाय न जल पाया तुझ में मिल' !
सिहर-सिहर मेरे दीपक जल !

जलते नभ में देख असंख्यक,
स्नेहहीन नित कितने दीपक;
जलमय सागर का उर जलता,
विद्‌युत् ले घिरता है बादल !
विहँस-विहँस मेरे दीपक जल !

द्रुम के अंग हरित कोमलतम,
ज्वाला को करते हृदयंगम;
वसुधा के जड़ अंतर में भी,
बंदी है तापों की हलचल !
बिखर-बिखर मेरे दीपक जल !

परिचय

जन्म : २६ मार्च १९०७, फर्रुखाबाद (उ.प्र.)
मृत्यु : ११ सितंबर १९८७ इलाहाबाद (उ.प्र.)
परिचय : महादेवी जी हिंदी साहित्य में छायावादी युग के चार स्तंभों में एक प्रतिभावान, सशक्त कवयित्री हैं । आधुनिक गीत काव्य में आप का स्थान सर्वोपरि है । आपकी कविताओं में पीड़ा और भावों की तीव्रता, भाषा में रहस्यवाद गहराई से दिखाई पड़ते हैं । आपके द्‌वारा लिखित संस्मरण भारतीय जीवन के चित्र हैं ।
प्रमुख कृतियाँ : नीहार, रश्मि, नीरजा, सांध्यगीत, दीपशिखा, सप्तपर्णा, प्रथम आयाम आदि (कविता संग्रह) अतीत के चलचित्र, स्मृति की रेखाएँ (रेखाचित्र) पथ के साथी, मेरा परिवार (संस्मरण), ठाकुर जी भोले हैं, आज खरीदेंगे हम ज्वाला (बाल कविता संकलन) ।

पद्‌य संबंधी

कविता : रस की अनुभूति कराने वाली, सुंदर अर्थ प्रकट करने वाली, लोकोत्तर आनंद देने वाली रचना कविता होती है। इसमें दृश्य की अनुभूतियों को साकार किया जाता है।

प्रस्तुत कविता में महादेवी जी ने दीपक के विविध प्रकार से जलने की प्रक्रिया के माध्यम से मानव को लोगों के पथ प्रकाशित करने की प्रेरणा दी है ।

✻ मेरी निश्वासों से द्रुततर,
सुभग न तू बुझने का भय कर;
मैं अँचल की ओट किए हूँ,
अपनी मृदु पलकों से चंचल !
सहज-सहज मेरे दीपक जल !
सीमा ही लघुता का बंधन,
है अनादि तू मत घड़ियाँ गिन;
मैं दृग के अक्षय कोषों से
तुझ में भरती हूँ आँसू जल !
सजल-सजल मेरे दीपक जल ! ✻

तम असीम तेरा प्रकाश चिर,
खेलेंगे नव खेल निरंतर;
तम के अणु-अणु में मिट जाना तू
उसकी उज्ज्वल स्मित में घुल-खिल !
मदिर-मदिर मेरे दीपक जल !
प्रियतम का पथ आलोकित कर !

—०—

(‘नीरजा’ से)

✻ (१) इस पद्यांश पर ऐसे प्रश्न तैयार कीजिए जिनके उत्तर निम्न शब्द हों ।
(अ) सीमा = ...
(आ) आँसू जल = ...
(२) पद्यांश में आए उपसर्ग-प्रत्यययुक्त शब्दों को ढूँढ़कर लिखिए ।
(३) पद्यांश की प्रथम पाँच पंक्तियों का सरल अर्थ लिखिए ।

श्रवणीय

‘दीपक’ से संबंधित कोई गीत यू-ट्यूब पर सुनिए ।

आसपास

‘भारतीय त्योहारों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण निहित हैं’ इस संदर्भ मे अंतरजाल से जानकारी प्राप्त कीजिए ।

संभाषणीय

‘तमसो मा ज्योतिर्गमय’ इस पंक्ति का कल्पना विस्तार कीजिए ।

7UIB84

शब्द संसार

आलोकित (वि.) = चमकता हुआ
अपरिमित (वि.) = असीम
अणु (पुं.सं.) = सूक्ष्म
शलभ (पुं.सं.) = पतंग, फतिंगा
द्रुम (पुं.सं.) = वृक्ष
अनादि (वि.) = जिसका आदि न हो

लेखनीय

‘प्रदूषण मुक्त त्योहार’ इस विषय पर निबंध लिखिए ।

पठनीय

पाठ्‌यपुस्तक की किसी कविता का मुखर एवं मौनवाचन कीजिए ।

पाठ के आँगन में

✻ सूचनानुसार कृतियाँ कीजिए :-

✻ एक शब्द में उत्तर दीजिए :
१. लघुता का बंधन - ······· २. माँग रहे तुमसे - ·······

पाठ से आगे

वृद्धाश्रम में रहने वाले बुजुर्गों के साथ कोई एक त्योहार मनाइए और अपना अनुभव मित्रों को बताइए ।

रचना बोध

....
....
....